om 23 Final_Page 1 and 2 02/03/2015 10:20 Page 6

मांडवी। गणातंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में आरोग्य एवं बांधकाम विभाग के मंत्री नितिन भाई पटेल व सूरत के कलेक्टर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. गायत्री, ब्र.कु. दीना।

पारला-खमंडी। आध्यात्मिक कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए विधायक के. सूर्याराव। साथ हैं वरिष्ठ समाज सेविका जय ललिता, ब्र.कु. मंजु तथा ब्र.कु. माला।

कलायत-हरियाणा। सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञानचर्चा के बाद दैनिक जागरण के वरिष्ठ पत्रकार डॉ. राजेन्द्र छाबरा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. दीपक,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. रेखा व ब्र.कु. कविता।

श्रीगंगानगर-राज.। जगदम्बा अंध विद्यालय के अध्यक्ष श्री श्री स्वामी परमहंस ब्रह्मदेव जी को ईश्वरीय साहित्य भेंट कर ईश्वरीय सेवाओं की जानकारी देते हुए ब्र.कु. दत्तात्रय,माउण्ट आबू।

भरतपुर-राज.। मास्टर्स ऐथलेटिक्स एसोसिएशन राज. द्वारा आयोजित 'रन फॉर क्लीन भरतपुर, हेल्दी भरतपुर एंड एज्युकेटेड भरतपुर' कार्यक्रम में आयकर आयुक्त सतीश शर्मा,आई.ई.एस. को माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देने के बाद ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. कविता।

मुम्बई। अंतर्राष्ट्रीय मेडिकल कॉन्फ्रेन्स में डॉ. प्रो. मेहेर मुस, डॉ. एस. नागेन्द्रन तथा डायरेक्टर काउंसिल रशियन कल्चर द्वारा ब्र.कु. डॉ. रमेश, ब्र.कु. डॉ. शोभना तथा ब्र.कु. डॉ. गीताजंली को विविध प्रकार के 9 पुरस्कार तथा स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया गया।

'मैं' और बाधाएं...!

बाधाओं को दूर करना

एक अंग्रेजी कहावत है, ''शांत समुद्र में नाविक कुशल नहीं बन पाते।'' बाद में आसान लगने वाली सारी चीज़ें शुरु में मुश्किल लगती हैं। हम अपनी समस्याओं से मुँह नहीं मोड़ सकते। केवल हारने वाले कोशिश छोड़ कर मैदान से हट जाते हैं। बाधाओं को दूर करके आगे बढ़ने वाले लोग उन लोगों की तुलना में अधिक सुरक्षित होते हैं, जिन्होंने कभी उनका सामना ही नहीं किया। हम सभी को कभी न कभी दिक्कतों का सामना करना ही पड़ता है। उनकी वजह से कई बार हम मायूस हो जाते हैं। निराशाओं का सामना सबको करना पड़ता है, पर जीतने वाले हताश नहीं होते। ऐसे हालात का जवाब दृढ़ता ही है।

अधिकतर लोग ठीक उस समय हार मान लेते हैं, जब सफलता उन्हें मिलने ही वाली होती है। विजय-रेखा बस एक कदम की दूरी पर होती है, तभी वे कोशिश बंद कर देते हैं। वे खेल के मैदान से अंतिम मिनट में हट जाते हैं, जबकि उस समय जीत का निशान उनसे केवल एक फुट के फासले पर होता है।

हम सफलता को कैसे मापते हैं?

असली सफलता किसी काम को अच्छी तरह करने, और उसके लक्ष्य को हासिल करने के एहसास से मापी जाती है।

सफलता इस बात से नहीं मापी जाती कि हमने ज़िन्दगी में कौन-सा ओहदा हासिल किया है, बल्कि इस बात से मापी जाती है कि हमने वह मुकाम कितनी रुकावटों को दूर करके हासिल किया है। सफलता इस बात से भी नहीं मापी जाती कि हम ज़िन्दगी में दूसरे लोगों की तुलना में कैसी उपलब्धियाँ हासिल कर रहे हैं, बल्कि इस बात से मापी जाती है कि हम अपनी क्षमताओं की तुलता में कितनी उपलब्धियाँ हासिल कर रहे हैं। सफल लोग अपने आपसे मुकाबला करते हैं। वे अपना खुद का रिकॉर्ड बेहतर बनाते हैं, और उसमें लगातार सुधार लाते रहते हैं।

सफलता इस बात से नहीं मापी जाती कि हमने ज़िन्दगी में कितनी ऊँचाई हासिल की है, बल्कि इस बात से मापी जाती है कि हम कितनी बार गिर कर उठे हैं। सफलता का आकलन गिर कर उठने की इस क्षमता से ही किया जाता है।

सफलता की हर कहानी महान असफलताओं की भी कहानी है

असफलता, सफलता हासिल करने का राजमार्ग है। आई.बी.एम. के टॉम वाट्सन, सीनियर का कहना, ''अगर आप सफल होना चाहते हैं, तो अपनी असफलता की दर दूनी कर दीजिए।''

अगर हम इतिहास पढ़ें, तो पाएंगे कि सफलता की हर कहानी के साथ महान असफलताएँ भी जुड़ी हुई हैं। लेकिन लोग उन असफलताओं पर ध्यान नहीं देते। वे केवल नतीजों को देखते हैं और सोचते हैं कि उस आदमी ने क्या किस्मत पाई है, ''वह सही वक्त पर, सही जगह रहा होगा।''

एक आदमी की ज़िन्दगी की कहानी बड़ी मशहूर है। यह आदमी 21 साल की उम्र में व्यापार में नाकामयाब हो गया; 22 साल की उम्र में वह एक चुनाव हार गया; 24 साल की उम्र में उसे व्यापार में फिर असफलता

सफलता की सारी कहानियों के साथ महान असफलताओं की कहानियाँ भी जुड़ी हुई हैं। फर्क केवल इतना था कि हर असफलता के बाद वे जोश के साथ फिर उठ खड़े हुए। इसे पीछे धकेलने वाली नहीं, बल्कि आगे बढ़ाने वाली नाकामयाबी कहते हैं। हम सीखते हुए और अपनी असफलताओं से सबक लेते हुए आगे बढ़ते हैं।

मिली; 26 साल की उम्र में उसकी पत्नी मर गई; 27 साल की उम्र में उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया; 34 साल की उम्र में वह कांग्रेस का चुनाव हार गया; 45 साल की आयु में उसे सीनेट के चुनाव में हार का सामना करना पड़ा; 47 साल की उम्र में वह उपराष्ट्रपति बनने में असफल रहा;49 साल की आयु में उसे सीनेट के एक और चुनाव में नाकामयाबी मिली; और वही आदमी 52 साल की उम्र में अमरीका का राष्ट्रपति चुना गया। वह आदमी अब्राहम लिंकन था।

क्या आप लिंकन को असफल मानेंगे? वह शर्म से सिर झुका कर मैदान से हट सकते थे, और अपनी वकालत फिर शुरु कर सकते थे। लेकिन लिंकन के लिए हार केवल एक भटकाव थी, सफर का अंत नहीं।

ट्रायोड ट्यूब के आविष्कारक ली डे फॉरेस्ट पर सन् 1913 में जिला अटार्नी ने यह इल्ज़ाम लगाते हुए मुकदमा दायर किया कि उन्होंने धोखाधड़ी की है। जिला अटार्नी का कहना था कि उन्होंने अपनी कंपनी के शेयर खरीदवाने के लिए लोगों को यह कह कर गुमराह किया है कि वह इंसान की आवाज़ अटलांटिक के पार तक पहुंचा सकते हैं। उन्हें सरेआम अपमानित किया गया। लेकिन हम सोच सकते हैं कि उन्होंने वह आविष्कार न किया होता, तो हम आज कहाँ होते।

10 दिसंबर, 1903 को न्यूयॉर्क टाइम्स के संपादकीय में राइट बंधुओं की सोच पर सवालिया निशान लगाया गया, जो उड़ सकने वाली हवा से भी हल्की मशीन का आविष्कार करने की कोशिश कर रहे थे। इसके एक हफ्ते बाद ही किट्टी हॉक में 'राइट बंधुओं' ने अपनी मशहूर उड़ान भरी।

65 साल की उम्र में कर्नल सेडर्स के पास पूँजी के नाम पर एक पुरानी कार और सामाजिक सुरक्षा योजना से मिला 100 डॉलर का चेक ही था। उन्होंने महसूस किया कि अपनी हालत बेहतर बनाने के लिए उन्हें कुछ करना चाहिए। उन्हें अपनी माँ का फ्राईड चिकन बनाने का नुस्खा याद आया, और वह उसे बेचने के लिए निकल पड़े। क्या हम जानते हैं कि पहला ऑर्डर हासिल होने से पहले उन्हें कितने दरवाज़ों को खटखटाना पड़ा? एक अंदाज़ के मुताबिक पहला ऑर्डर हासिल होने से पहले उन्होंने हज़ारों दरवाज़े खटखटाए। हममें से ज्यादातर लोग तीन बार, दस बार, अधिक से अधिक सौ बार कोशिश करके हार मान लेते हैं और उसके बाद कहते हैं कि हमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की। वाल्ट डिज़्नी जब युवक थे तो कई अखबारों के संपादकों ने उन्हें यह कह कर लौटा दिया कि उनमें प्रतिभा है ही नहीं। एक दिन एक चर्च के पादरी ने उन्हें कुछ कार्टून बनाने का काम दिया। डिज़्नी चर्च में जिस शेड के नीचे काम कर रहे थे, वहाँ चूहे उधम बचा रहे थे। एक चूहे को देखकर उनके मन में एक कार्टून बनाने का ख्याल आया और वहीं से मिकी माउस का जन्म हुआ।

सफल लोग महान काम नहीं करते, वे छोटे-छोटे कामों को महान ढंग से करते हैं।

एक दिन ऊंचा सुनने वाला चार साल का लड़का स्कूल से घर लौटा, तो उसकी जेब में उसके शिक्षक का एक नोट रखा था, जिस पर लिखा था, ''आपका टॉमी इतना मंदबुद्धि का है कि वह कुछ नहीं सीख सकता। उसे स्कूल से बाहर निकाल लीजिए।'' उसकी माँ ने वह नोट पढ़ कर जवाब दिया, ''मेरा टॉमी इतना मंदबुद्धि नहीं है कि कुछ सीख न सके। मैं उसे खुद पढ़ाऊंगी।'' और वही टॉमी एक दिन बड़ा होकर महान थॉमस एडीसन बना। वह स्कूल में केवल तीन महीने पढ़ सके थे।